

प्रारंभिक परीक्षा

उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति

संदर्भ

सर्वोच्च न्यायालय कॉलेजियम ने पांच उच्च न्यायालयों मध्य प्रदेश, कर्नाटक, गुवाहाटी, पटना और झारखंड के लिए नए मुख्य न्यायाधीशों की सिफारिश की।

नियुक्ति प्रक्रिया -

- **कॉलेजियम द्वारा सिफारिश:** सर्वोच्च न्यायालय कॉलेजियम (जिसका नेतृत्व मुख्य न्यायाधीश करते हैं और जिसमें सर्वोच्च न्यायालय के 4 वरिष्ठतम न्यायाधीश होते हैं) उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के लिए नामों की सिफारिश करता है।
 - वरिष्ठता, योग्यता और क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व प्रमुख विचारणीय बिंदु हैं।
- **केन्द्र सरकार की भूमिका:** केन्द्रीय विधि मंत्रालय कॉलेजियम की सिफारिश को प्रधानमंत्री के पास भेजता है।
 - प्रधानमंत्री औपचारिक नियुक्तियों के लिए राष्ट्रपति को सलाह देते हैं।
 - सरकार स्पष्टीकरण मांग सकती है लेकिन कॉलेजियम की सिफारिश को अनिश्चित काल तक खारिज नहीं कर सकती।
- **शपथ एवं कार्यकाल:** नियुक्त मुख्य न्यायाधीश **अनुच्छेद-219** के तहत शपथ लेता है।
 - **62 वर्ष की आयु** में सेवानिवृत्त होते हैं (**अनुच्छेद-217(1)**)।

संवैधानिक प्रावधान -

- **अनुच्छेद 217:** मुख्य न्यायाधीश (CJ) सहित उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति को नियंत्रित करता है।
- **अनुच्छेद 222:** न्यायाधीशों (मुख्य न्यायाधीशों सहित) को एक उच्च न्यायालय से दूसरे उच्च न्यायालय में स्थानांतरित करने की अनुमति देता है।

प्रमुख बिंदु -

- **कॉलेजियम प्रणाली:** तीन न्यायाधीशों के मामलों (1981, 1993, 1998) से विकसित, यह एक न्यायिक मिसाल है, जिसका **संविधान में उल्लेख नहीं** है।
- **CJ की नियुक्ति से अंतर:** CJ की नियुक्ति पूरी तरह वरिष्ठता के आधार पर की जाती है, जबकि हाईकोर्ट के CJ की नियुक्ति कॉलेजियम की सिफारिशों के आधार पर की जाती है।
- **विवाद:** पारदर्शिता की कमी, नियुक्तियों में देरी और सरकार-न्यायपालिका झगड़े।

स्रोत: [The Hindu: SC Collegium recommends new CJ for 5 High Courts](#)

ओपेक और ओपेक+

संदर्भ

कम कीमतों के बावजूद, ओपेक+ से तेल उत्पादन में वृद्धि की उम्मीद है।

ओपेक (पेट्रोलियम निर्यातक देशों का संगठन) क्या है ?

- गठन: 1960
- संस्थापक सदस्य: ईरान, इराक, कुवैत, सऊदी अरब, वेनेजुएला
- उद्देश्य: तेल बाजारों को स्थिर करने, उत्पादकों के लिए उचित मूल्य सुनिश्चित करने और उपभोक्ताओं को नियमित आपूर्ति के लिए सदस्य देशों के बीच पेट्रोलियम नीतियों का समन्वय और एकीकरण करना।
- वर्तमान सदस्यों (12 देश) में शामिल हैं: सऊदी अरब, इराक, ईरान, यूएई, नाइजीरिया,
 - अंगोला ने 1 जनवरी 2024 से अपनी सदस्यता वापस ले ली।

ओपेक+ क्या है?

यह 2016 में गठित पेट्रोलियम निर्यातक देशों के संगठन (OPEC) का विस्तार है, और इसमें ओपेक के सदस्य और गैर-ओपेक तेल उत्पादक देश दोनों शामिल हैं।

- प्रमुख गैर-ओपेक सदस्य: रूस, कजाकिस्तान, मैक्सिको, ओमान, आदि।
- गठन का कारण: वैश्विक स्तर पर उत्पादन में कटौती या वृद्धि का समन्वय करके गिरती तेल की कीमतों का मुकाबला करना।
- प्रमुख भूमिका: ओपेक+ मिलकर वैश्विक तेल आपूर्ति के 40% से अधिक पर नियंत्रण रखता है तथा अंतर्राष्ट्रीय तेल कीमतों पर महत्वपूर्ण प्रभाव रखता है।
- कजाकिस्तान और यूएई जैसे देश उत्पादन बढ़ा रहे हैं, जिससे सऊदी अरब जैसे नेताओं के साथ टकराव का खतरा है।

स्रोत: [The Hindu: OPEC+ groupings expected to open taps more despite price slumps](#)

राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग

संदर्भ

NCPCR ने अशोका विश्वविद्यालय के दो छात्रों की मौत के मामले में हरियाणा के अधिकारियों को नोटिस भेजा है।

NCPCR के बारे में -

- यह बाल अधिकार संरक्षण आयोग अधिनियम, 2005 के तहत भारत सरकार द्वारा गठित एक वैधानिक निकाय है।
- संरचना: अध्यक्ष (आवश्यक नहीं कि महिला हो) + 6 सदस्य (कम से कम 2 महिलाएं)
- नियुक्ति एवं निष्कासन: केंद्र सरकार
- कार्यकाल: 3 वर्ष (अध्यक्ष एवं सदस्य दोनों)
 - अध्यक्ष और सदस्य दो कार्यकाल से अधिक पद पर नहीं रह सकते।
 - पद धारण करने की अधिकतम आयु: अध्यक्ष (65 वर्ष), सदस्य (60 वर्ष)
- NCPCR केन्द्र सरकार को वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करता है।
- NCPCR निम्नलिखित का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार है:
 - शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2005
 - यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण (POCSO) अधिनियम, 2012
 - किशोर न्याय (बच्चों की देखभाल और संरक्षण) अधिनियम, 2015

आयोग द्वारा 0-18 वर्ष की आयु के व्यक्ति को बालक माना जाता है।

बाल अधिकारों की रक्षा के लिए NCPCR द्वारा पहल -

- **GHAR**: कोविड-19 के दौरान बाल देखभाल गृहों से बच्चों को उनके परिवारों के पास वापस भेजने के लिए गो होम एंड रीयूनाइट पोर्टल।
- **MASI पोर्टल**: मॉनिटरिंग ऐप फॉर सीमलेस इन्वेस्टिगेशन (बाल देखभाल संस्थानों की वास्तविक समय निगरानी के लिए)
- **बाल स्वराज पोर्टल**: संरक्षण और देखभाल की आवश्यकता वाले बच्चों की ऑनलाइन ट्रैकिंग और निगरानी के लिए

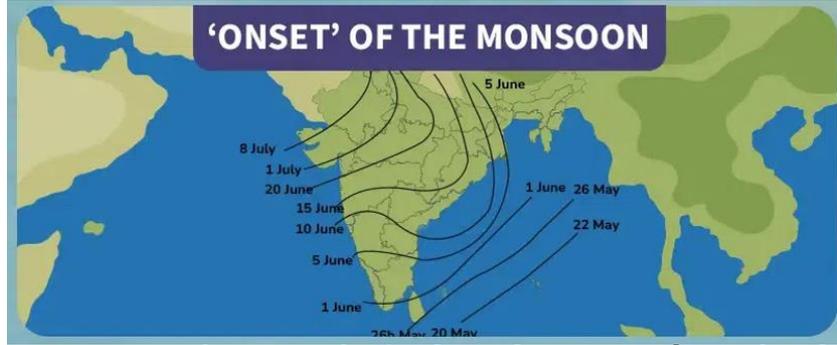
स्रोत: [Indian Express: NCPOPCR sends notice to Haryana top cop and education secretary](#)

मानसून का आगमन क्या है, यह जल्दी क्यों है?

संदर्भ

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) के अनुसार, दक्षिण-पश्चिम मानसून अपनी सामान्य तिथि (1 जून) से आठ दिन पहले 24 मई, 2025 को केरल पहुंचा, जिससे यह 2009 के बाद से सबसे जल्दी आगमन है।

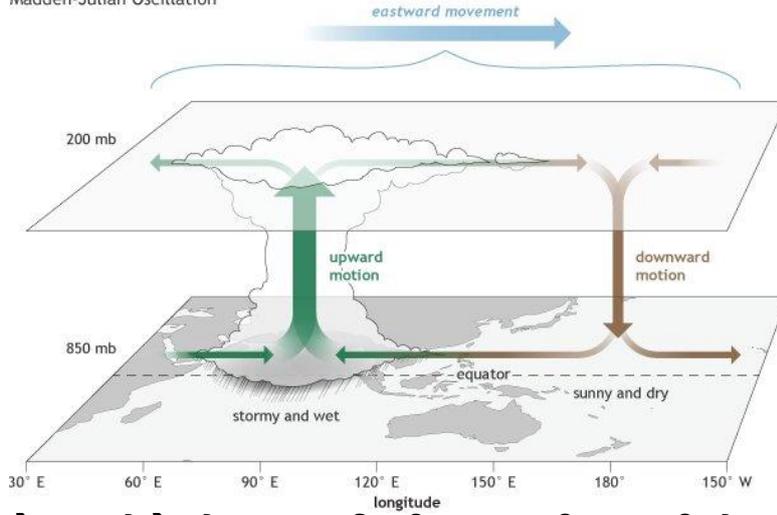
मानसून का आगमन -



- मानसून का आगमन भारतीय उपमहाद्वीप में दक्षिण-पश्चिम मानसून मौसम की आधिकारिक शुरुआत को दर्शाता है।
- यह वायुमंडलीय और समुद्री स्थितियों में परिवर्तन के कारण दक्षिणी केरल में पहली महत्वपूर्ण और निरंतर वर्षा है।
- **घोषितकर्ता:** भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) विशिष्ट मौसम संबंधी मानदंडों के आधार पर आधिकारिक तौर पर मानसून के आगमन की घोषणा करता है।
- **मानसून की शुरुआत के लिए वैज्ञानिक मानदंड:**
 - **वर्षा:** केरल के 60% प्रमुख स्टेशनों पर लगातार दो दिनों तक ≥ 2.5 मिमी वर्षा दर्ज की जानी चाहिए।
 - **पवन क्षेत्र:** निचले क्षोभमंडल में पश्चिमी हवाओं की गहराई और गति को मानदंडों के अनुरूप होना चाहिए।
 - **OLR (हीट/रेडिएशन):** आउटगोइंग लॉन्गवेव रेडिएशन एक विशिष्ट बॉक्स क्षेत्र में < 200 W/m^2 होना चाहिए।
- **शीघ्र शुरुआत के कारक (2025):**
 - अरब सागर एवं बंगाल की खाड़ी में समुद्र सतह का तापमान अधिक होना।
 - सक्रिय मैडेन-जूलियन दोलन (MJO)
 - सोमाली जेट की तेज हवाएं जल्दी नमी लेकर आ रही हैं।
- **निम्न दबाव प्रणालियाँ मानसून प्रवाह को तीव्र कर रही हैं।**
- **क्या जल्दी मानसून = अच्छा मानसून?**
 - नहीं। शुरुआत केवल आगमन को दर्शाती है, वर्षा की तीव्रता या वितरण को नहीं।
 - प्रारंभिक वर्षों में भी सूखा या अनियमित वर्षा देखी जा सकती है।

मैडेन-जूलियन ऑसिलेशन (MJO) - संक्षेप में

Madden-Julian Oscillation



- यह क्या है: एक बड़े पैमाने पर उष्णकटिबंधीय वायुमंडलीय गड़बड़ी जो हर 30-60 दिनों में दुनिया भर में पूर्व की ओर बढ़ती है।
- प्रमुख विशेषताएँ:
 - इसमें वर्षा और हवाओं के युग्मित पैटर्न शामिल हैं।
 - यह हिंद महासागर से शुरू होता है और प्रशांत महासागर की ओर बढ़ता है।
 - यह मानसून, चक्रवात और एल नीनो/ला नीना पैटर्न सहित वैश्विक स्तर पर मौसम को प्रभावित करता है।
- भारत पर प्रभाव:
 - मजबूत MJO चरण मानसून वर्षा को बढ़ा सकते हैं।
 - कमजोर या अनुपस्थित MJO चरण वर्षा को दबा सकते हैं, जिससे सूखा पड़ सकता है।
- यह क्यों महत्वपूर्ण है: MJO अंतर-मौसमी मौसम पूर्वानुमान के लिए महत्वपूर्ण है, विशेष रूप से भारतीय महासागर क्षेत्र में मानसून की भविष्यवाणी और चक्रवात की जानकारी के लिए।

स्रोत: [Indian Express: What is Monsoon Onset, why it is early](#)

स्वास्थ्य हस्तक्षेपों का अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (ICHI)

संदर्भ

भारत और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने स्वास्थ्य हस्तक्षेपों के अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (ICHI) के अंतर्गत एक समर्पित पारंपरिक चिकित्सा मॉड्यूल शुरू करके आयुष को वैश्विक मुख्यधारा में लाने के लिए साझेदारी की है।

स्वास्थ्य हस्तक्षेपों के अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण (ICHI) के बारे में -

- **परिभाषा:** ICHI एक मानकीकृत उपकरण है जिसका उपयोग वैश्विक स्तर पर नैदानिक और सांख्यिकीय दोनों उपयोग के लिए स्वास्थ्य हस्तक्षेपों की रिपोर्ट और विश्लेषण करने के लिए किया जाता है।
- **उद्देश्य:** यह स्वास्थ्य को बेहतर बनाने या बनाए रखने के उद्देश्य से की जाने वाली कार्रवाइयों को वर्गीकृत करने के लिए एक सामान्य ढांचा प्रदान करके डब्ल्यूएचओ के अंतर्राष्ट्रीय रोगों के वर्गीकरण- ग्यारहवें संस्करण (ICD-11) का पूरक है।
- **स्वास्थ्य हस्तक्षेप क्या है?:** किसी व्यक्ति या जनसंख्या के लिए, उसके साथ, या उसकी ओर से स्वास्थ्य, कार्यप्रणाली या स्वास्थ्य स्थितियों का आकलन करने, सुधारने, बनाए रखने, बढ़ावा देने या संशोधित करने के लिए की गई कोई भी कार्रवाई।
- **विकसित:** विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) और WHO अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण परिवार (WHO-FIC) द्वारा।
- **कवरेज:** ICHI में सभी स्वास्थ्य देखभाल क्षेत्रों में हस्तक्षेप शामिल हैं:
 - अत्यधिक देखभाल
 - मानसिक स्वास्थ्य
 - प्राथमिक देखभाल
 - पुनर्वास
 - रोकथाम
 - सार्वजनिक स्वास्थ्य
 - पारंपरिक चिकित्सा
- **ICHI में पारंपरिक चिकित्सा मॉड्यूल - प्रमुख लाभ:**
 - आयुष सेवाओं के लिए पारदर्शी बिलिंग और उचित मूल्य निर्धारण को सक्षम बनाता है।
 - स्वास्थ्य बीमा कवरेज में आयुष उपचारों के आसान एकीकरण की सुविधा प्रदान करता है।
 - अस्पताल प्रबंधन, नैदानिक दस्तावेज़ीकरण और स्वास्थ्य संबंधी अनुसंधान में सुधार करता है।
 - आयुष उपचारों की वैश्विक मान्यता और पहुंच को बढ़ावा देना।

स्रोत: [PIB: India Partners with WHO to Mainstream Ayush Globally through a Landmark Agreement on Traditional Medicine Interventions](#)

समाचार संक्षेप में

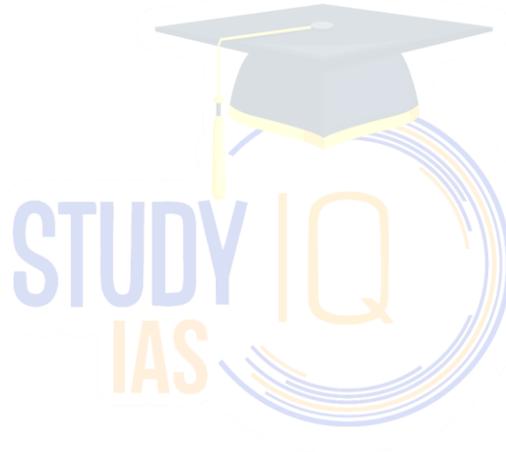
D9 लोकोमोटिव

समाचार? प्रधानमंत्री ने गुजरात के दाहोद में भारत के पहले स्वदेशी D9 लोकोमोटिव का उद्घाटन किया।

D9 लोकोमोटिव के बारे में -

- शक्ति: 9,000 अश्वशक्ति (HP) (डब्ल्यूएजी-12बी- 12,000 एचपी के बाद भारत में दूसरा सबसे शक्तिशाली लोकोमोटिव)
- निर्माता: सीमेंस ('मेक इन इंडिया' के अंतर्गत)
- उद्देश्य: भारी माल परिवहन के लिए विद्युत माल इंजन।

स्रोत: [Indian Express](#)



समाचार में स्थान

साओ पाओलो, ब्राज़ील



समाचार? विरदा सांस्कृतिक कार्यक्रम ब्राज़ील के साओ पाओलो में मनाया गया।

साओ पाओलो

- साओ पाओलो दक्षिण-पूर्वी ब्राज़ील में एक शहर है।

ब्राज़ील

- **स्थान:** दक्षिण अमेरिका
- **राजधानी:** ब्रासीलिया
- **सीमा साझा करना:** ब्राज़ील की सीमा प्रत्येक दक्षिण अमेरिकी देश (चिली और इक्वाडोर को छोड़कर) और अटलांटिक महासागर से लगती है।
- **प्रमुख भौगोलिक विशेषताएँ:**
 - अमेज़न वर्षावन
 - अमेज़न नदी
 - ब्राज़ीलियाई हाइलैंड्स (प्लानाल्टो ब्रासीलीरो)
 - **पैटानल (विश्व की सबसे बड़ी आर्द्रभूमि)**
 - सेराडो (उष्णकटिबंधीय सवाना)
 - अटलांटिक वन (माता अटलांटिका)
 - काआटिंगा (सूखा प्रतिरोधी वनस्पति सहित शुष्क झाड़ीदार पारिस्थितिकी तंत्र)।
 - गुयाना हाइलैंड्स (वेनेजुएला और गुयाना की सीमा पर स्थित तथा कई अमेज़न सहायक नदियों का स्रोत और नाटकीय ढलानों और झरनों का घर।)
 - इगुआकु फॉल्स (इगुआकु/इगुआज़ू)।
 - पिको दा नेब्लीना (ब्राज़ील की सबसे ऊंची चोटी)

स्रोत: [The Hindu](#)

बाल्टिक सागर



समाचार? रूस ने बाल्टिक सागर में नौसैनिक अभ्यास किया।

बाल्टिक सागर के बारे में -

- **स्थान:** यह उत्तरी यूरोप में अटलांटिक महासागर की एक विस्तारित भुजा है।
- **सीमावर्ती देश:** डेनमार्क, एस्टोनिया, फिनलैंड, जर्मनी, लातविया, लिथुआनिया, पोलैंड, रूस और स्वीडन।
- यह डेनिश जलडमरूमध्य के माध्यम से अटलांटिक महासागर से जुड़ता है।

तथ्य

- **बाल्टिक देश:** लिथुआनिया, एस्टोनिया और लातविया।
- **नॉर्डिक देश:** डेनमार्क, नॉर्वे, स्वीडन, फिनलैंड और आइसलैंड।
- **स्कैंडिनेवियाई देश:** डेनमार्क, नॉर्वे और स्वीडन।

स्रोत: [Indian Express](#)

संपादकीय सारांश

एआई और अंतरिक्ष उपग्रह

संदर्भ

एआई उपग्रहों में क्रांति ला रहा है, लेकिन यह नए जोखिम, कानूनी दुविधाएं और भू-राजनीतिक अनिश्चितताएं भी उत्पन्न कर रहा है, जिनका तत्काल विनियमन आवश्यक है।

उपग्रहों में एआई के अनुप्रयोग -

- **स्वायत्त संचालन:** स्वतंत्र संचालन, डॉकिंग, कक्षा में सर्विसिंग, और मलबा हटाना (उदाहरण के लिए, स्पेसएक्स उपग्रह टकराव से बचने के लिए एआई का उपयोग करता है)।
- **स्व-निदान एवं मरम्मत:** आंतरिक दोषों का पता लगाना और ग्राउंड नियंत्रण के बिना सुधार करना।
- **अनुकूलित मार्ग नियोजन:** टकराव से बचने या ईंधन संरक्षण के लिए वास्तविक समय कक्षीय समायोजन।
- **भू-स्थानिक खुफिया:** आपदाओं या घटनाओं का वास्तविक समय पर पता लगाना और उपग्रहों के बीच बुद्धिमान समन्वय।
- **लड़ाकू समर्थन:** रक्षा और टोही मिशनों के लिए स्वायत्त खतरे का पता लगाना और ट्रैकिंग।

चुनौतियाँ और मुद्दे -

- **एआई भ्रम और गलत निर्णय:** एआई सिस्टम हानिरहित वस्तुओं (जैसे, वाणिज्यिक उपग्रहों) को खतरे के रूप में गलत तरीके से वर्गीकृत कर सकते हैं, जिससे अनजाने में बचाव या रक्षात्मक कार्रवाई हो सकती है। इससे तनाव बढ़ सकता है या कक्षा में टकराव की स्थिति पैदा हो सकती है।
- **कानूनी अस्पष्टताएँ:** बाह्य अंतरिक्ष संधि (OST) और देयता सम्मेलन जैसी मौजूदा संधियाँ मानवीय निर्णय लेने की बात मानती हैं। स्वायत्त AI सिस्टम द्वारा की गई कार्रवाइयों से कैसे निपटा जाए, इस बारे में उनमें स्पष्टता का अभाव है।
- **उत्तरदायित्व और दोष निर्धारण:** एआई निर्णयों के कारण टकराव या क्षति होने की स्थिति में, यह स्पष्ट नहीं है कि कौन उत्तरदायी है - ऑपरेटर, एआई डेवलपर, लॉन्चिंग राज्य या पंजीकरण का देश।
- **दोहरे उपयोग की दुविधा:** एआई क्षमताएं नागरिक और सैन्य दोनों कार्यों में काम आ सकती हैं। एक स्वायत्त उपग्रह द्वारा नियमित कार्य करने को शत्रुतापूर्ण कार्य के रूप में गलत तरीके से समझा जा सकता है, खासकर भू-राजनीतिक रूप से तनावपूर्ण क्षेत्रों में।
- **भू-राजनीतिक संघर्षों में वृद्धि:** विवादित कक्षीय क्षेत्रों में स्वायत्त युद्धाभ्यास को उत्तेजक माना जा सकता है, जिससे गलतफहमी, कूटनीतिक गतिरोध या यहां तक कि संघर्ष का खतरा बढ़ सकता है।
- **डेटा गोपनीयता और नैतिक चिंताएँ:** एआई उपग्रह पृथ्वी अवलोकन डेटा की विशाल मात्रा एकत्र करते हैं। उचित प्रशासन के बिना, इस डेटा का दुरुपयोग हो सकता है या गोपनीयता मानदंडों का उल्लंघन हो सकता है, खासकर निगरानी अनुप्रयोगों में।

समाधान और आगे की राह -

- **स्वायत्तता स्तरों को वर्गीकृत करना:** उपग्रह खुफिया और नियंत्रण स्तरों के आधार पर विनियमित करना।
- **मानव-सक्षम अधिदेश:** यह सुनिश्चित करना कि महत्वपूर्ण निर्णयों पर मानव निगरानी बनी रहे।
- **अंतर्राष्ट्रीय परीक्षण एवं प्रमाणन:** अंतरिक्ष में एआई व्यवहार और सुरक्षा के लिए वैश्विक मानक स्थापित करना।
- **दायित्व मॉडल अपनाना:** सख्त दायित्व और संयुक्त बीमा जैसे विमानन/समुद्री मॉडल का उपयोग करना।
- **वैश्विक सहयोग:** एआई-चालित अंतरिक्ष हथियारों की दौड़ को रोकने और साझा जिम्मेदारी सुनिश्चित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संधियों और मानदंडों को बढ़ावा देना।

स्रोत: [The Hindu: The dawn of autonomous satellites and the legal vacuum above us](#)

मानसून के बावजूद गर्मी से निपटने पर ध्यान केंद्रित करना

संदर्भ

- "भारत 2047: जलवायु-लचीले भविष्य का निर्माण" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य के बीच बढ़ते अंतर्संबंधों पर प्रकाश डाला गया।
- ट्रेड यूनियन नेताओं से लेकर जलवायु वैज्ञानिकों तक विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों ने हीटवेव जैसे जलवायु-प्रेरित तनाव से निपटने के लिए अंतःविषयक और निवारक स्वास्थ्य सेवा ढांचे की आवश्यकता पर बल दिया।

मुख्य मुद्दे क्या हैं?

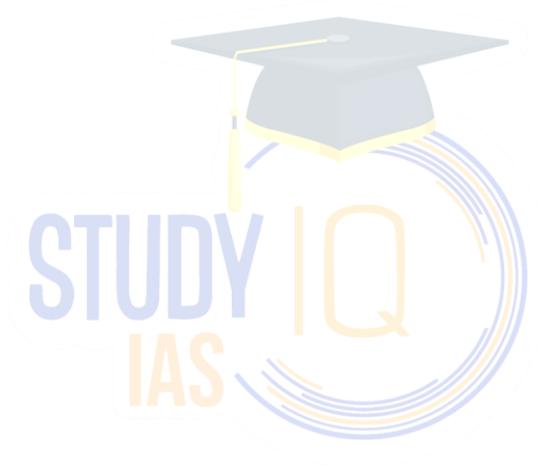
- **हीटवेव और सार्वजनिक स्वास्थ्य तनाव:** जलवायु परिवर्तन के कारण भारत को बार-बार और तीव्र होती हीटवेव का सामना करना पड़ रहा है।
 - स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों में तापघात, निर्जलीकरण, गुर्दे की विफलता, तथा मधुमेह और हृदय संबंधी बीमारियों जैसी दीर्घकालिक बीमारियों का बिगड़ना शामिल है।
- **संकटकालीन देखभाल पर अत्यधिक निर्भरता:** भारत की स्वास्थ्य प्रतिक्रिया वर्तमान में प्रतिक्रियात्मक है, जो रोकथाम और शीघ्र हस्तक्षेप के बजाय आपातकालीन प्रवेश, IV द्रव और अस्पताल के बिस्तरों पर केंद्रित है।
- **प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल की जलवायु संबंधी अप्रस्तुतता:** स्वास्थ्य एवं कल्याण केन्द्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, तथा आशा जैसे अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्ताओं का जलवायु कार्रवाई में कम उपयोग किया जाता है।
- **नैदानिक अंतराल:** कई स्वास्थ्य सेवा प्रदाता गर्मी से संबंधित लक्षणों की जांच नहीं करते हैं।
 - मानकीकृत नैदानिक प्रोटोकॉल और ग्रीष्मकालीन तैयारी अभ्यासों के अभाव से समय पर प्रतिक्रिया में बाधा आती है।
- **समानता और भेद्यता मानचित्रण:** गर्मी का प्रभाव एक समान नहीं है - वे असमान रूप से प्रभावित करते हैं:
 - अनौपचारिक श्रमिक
 - खराब हवादार स्कूलों में बच्चे
 - झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले बुजुर्ग
 - दैनिक वेतन भोगियों या झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वालों के लिए "घर के अंदर रहें" जैसा मार्गदर्शन उचित नहीं है।
- **नीतियों में स्वास्थ्य एकीकरण न्यूनतम है:** जलवायु परिवर्तन पर भारत की राष्ट्रीय कार्य योजना (एनएपीसीसी) में जलवायु परिवर्तन के लिए रणनीतिक ज्ञान पर राष्ट्रीय मिशन शामिल है, लेकिन स्वास्थ्य एकीकरण न्यूनतम है।
- **ताप कार्ययोजनाओं (HAP) को कम अपनाया जाना: अहमदाबाद ताप कार्ययोजना (2013) एक अग्रणी मॉडल है - जिसने संवेदनशील आबादी में ताप से संबंधित मृत्यु दर में 61% की कमी की है।**
 - हालाँकि, केवल कुछ ही भारतीय शहरों और राज्यों में कार्यात्मक या अद्यतन HAPs हैं।

आगे की राह -

- **अंतर-क्षेत्रीय सहयोग की आवश्यकता:** शहरी योजनाकारों, श्रम विभागों, जल प्राधिकरणों और जलवायु वैज्ञानिकों को स्वास्थ्य क्षेत्र के साथ समन्वय करना होगा।
 - उदाहरण:
 - आंगनवाड़ी केन्द्रों में ठंडी छत
 - शहरी मलिन बस्तियों में आश्रय स्थलों पर धुंध का छिड़काव
 - बाहरी मजदूरों के लिए समायोजित कार्य घंटे
- **निवारक, समानता-केंद्रित स्वास्थ्य नीति के लिए सिफारिशें:**
 - मौसम संबंधी पूर्व चेतावनी प्रणालियों को स्वास्थ्य अवसंरचना से जोड़ना।

- गर्मी संबंधी चेतावनियों और जलयोजन रणनीतियों के प्रसार के लिए आशा कार्यकर्ताओं को सक्रिय करना।
- मोबाइल जलयोजन केंद्र, सब्सिडी वाले आश्रय स्थल और सुरक्षात्मक श्रम कानून लागू करना।
- केवल ऊपर से नीचे तक के हस्तक्षेपों के साथ नहीं, बल्कि जमीनी स्तर की आवाजों के साथ मिलकर समाधान तैयार करना।

स्रोत: [The Hindu: Focus on heat-resilience despite the monsoon](#)



गर्भावस्था से पहले एनीमिया का प्रबंधन करना

संदर्भ

- एनीमिया, विशेष रूप से आयरन की कमी से होने वाला एनीमिया (आईडीए), भारत में प्रजनन आयु की महिलाओं में एक मूक किन्तु घातक स्वास्थ्य समस्या बनी हुई है।
- इस जनसांख्यिकी में 57% से अधिक महिलाएं एनीमिया से पीड़ित हैं, तथा अक्सर गर्भावस्था के दौरान उनका हीमोग्लोबिन स्तर खतरनाक रूप से कम होता है।
- इससे मातृ एवं प्रसवकालीन स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ता है।

चुनौतियां -

- **देर से पता लगना:** गर्भधारण से पहले एनीमिया का अक्सर पता नहीं चल पाता, जिसके कारण प्री-एक्लेमप्सिया, जन्म के समय कम वजन वाला शिशु, प्रसवोत्तर रक्तस्राव और समय से पूर्व जन्म जैसी जटिलताएं उत्पन्न हो जाती हैं।
- **मौखिक आईएफए पर अत्यधिक निर्भरता:** मौखिक आयरन-फोलिक एसिड (आईएफए) अनुपूरण खराब अवशोषित होता है, जठरांत्र संबंधी समस्याओं का कारण बनता है, और इसका पालन कम होता है, विशेष रूप से गर्भावस्था के दौरान।
- **एनीमिया के अन्य कारणों की उपेक्षा:** विटामिन बी 12 की कमी (लगभग 49% महिलाओं को प्रभावित करती है), थायरॉयड विकार और गर्भावधि मधुमेह अक्सर जांच के बिना रह जाते हैं, जिससे केवल IFA उपचार की प्रभावकारिता कम हो जाती है।
- **गर्भधारण-पूर्व स्वास्थ्य पर ध्यान का अभाव:** स्वास्थ्य नीतियां अधिकतर गर्भावस्था-केंद्रित होती हैं न कि गर्भावस्था-पूर्व केंद्रित।
- **गर्भधारण पूर्व देखभाल के प्रति सामाजिक उपेक्षा:** गर्भधारण पूर्व जांच पर सांस्कृतिक या व्यवस्थित रूप से जोर नहीं दिया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप प्रारंभिक हस्तक्षेप के अवसर चूक जाते हैं।

सरकारी पहल -

- **पोषण अभियान (राष्ट्रीय पोषण मिशन):** इसका उद्देश्य महिलाओं, किशोरियों और बच्चों में एनीमिया को कम करना है।
- **एनीमिया मुक्त भारत (एमबी):** 6x6x6 रणनीति (6 लाभार्थी × 6 हस्तक्षेप × 6 संस्थागत तंत्र) के माध्यम से एनीमिया की व्यापकता में प्रति वर्ष 3% की कमी का लक्ष्य।
- **साप्ताहिक आयरन और फोलिक एसिड अनुपूरण (डब्ल्यूआईएफएस):** किशोरों, विशेषकर स्कूल जाने वाली लड़कियों पर लक्षित।
- **RMNCH+A रणनीति (प्रजनन, मातृ, नवजात, बाल और किशोर स्वास्थ्य):** देखभाल की निरंतरता पर ध्यान केंद्रित करती है, लेकिन अभी भी पूर्वधारणा स्वास्थ्य पर कम जोर देती है।

समाधान -

- **मातृ स्वास्थ्य को पुनर्परिभाषित करना:** निवारक रणनीति के रूप में गर्भावस्था-आधारित देखभाल से गर्भधारण-पूर्व-आधारित देखभाल की ओर बढ़ना।
- **अंतःशिरा फेरिक कार्बोक्सिमाल्टोज (IV FCM) अपनाना:** IV FCM अवशोषण संबंधी समस्याओं को दूर करता है और हीमोग्लोबिन को तेजी से बहाल करता है - जो मध्यम से गंभीर एनीमिया के लिए एक गेम-चेंजर है।
- **संयुक्त पोषक चिकित्सा:** समग्र और दुर्दम्य एनीमिया उपचार के लिए इंजेक्शन योग्य विटामिन बी12 + फोलेट + IV आयरन का उपयोग करना।
- **व्यापक गर्भधारण पूर्व जांच:** गर्भधारण पूर्व जांच में थायरॉइड कार्यप्रणाली, रक्त शर्करा और विटामिन बी12 को शामिल करना।

- **सामुदायिक सहभागिता को मजबूत करना:** मौजूदा मातृ कार्यक्रमों में गर्भधारण-पूर्व स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को सशक्त बनाना।
- **नीति और व्यवहारगत बदलाव:** प्रसवपूर्व देखभाल की तरह गर्भधारणपूर्व देखभाल को भी सामान्य बनाना।
 - परिवारों को शीघ्र स्वास्थ्य जांच कराने के लिए प्रोत्साहित करना।

स्रोत: [The Hindu: Manage anaemia before pregnancy](#)

